Lecture No - 2

1

Name of the College - APSM College, Barauni, Begusarai
Name - Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt. - AIH&C
Lesson/Plan for class - B.A, AIH&C(H), part I, paper - I
Date - 10-04-2021
Name of the topic - Regional dynasties - The pallavas.

(पल्लव वंश) 575 - 897 ई०

सुदूर दक्षिण में पल्लव राजवंश का उदय उस समय हुआ, जब सातवाहन साम्राज्य विघटन हो गया था। आरंभ में पल्लव सातवाहनों के अधीनस्थ शासक थे; परंतु वाकाटक, आभीर, कदम्ब-वंशों की भाँति पल्लवों ने भी अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली तथा 6वीं सदी ई० तक दक्षिण भारतीय राजनीति में अपना विशेष स्थान बना लिया। तालगुंडा अभिलेख से भी पल्लवों के क्षत्रिय होने की पुष्टि होती है। तालगुंडा अभिलेख में पल्लवों को क्षत्रिय कहा गया है।

पल्लव राजवंश का संस्थापक बप्पदेव था, जिसके अधीन आंध्रपथ (आन्ध्रप्रदेश) और तोण्डमण्डलम् दोनों ही थे। इनका उदय तीसरी या चौथी शताब्दी में माना जाता है, लगभग दो शताब्दियों का एक कनांचली शक्ति का जीवन व्यतीत करने के बाद, छठी शताब्दी के मध्य में पल्लवों की शक्ति का विकास बड़ी शीघ्रता से हुआ। अब वे एक साम्राज्यिक शक्ति बन गए थे। और अपने समकालीन चालुक्यों के समान ही दक्षिण में प्रभुत्व

P.T.O.

जमाने के प्रयास में लीन हो गए। काशाकुडि और वेलूरपालैयम ताम्रपत्रों में पल्लवों की वंश-तालिका इस प्रकार दी गई है।

पल्लव वंश (कांचीपुरम)

↓

सिंहवर्मन

↓

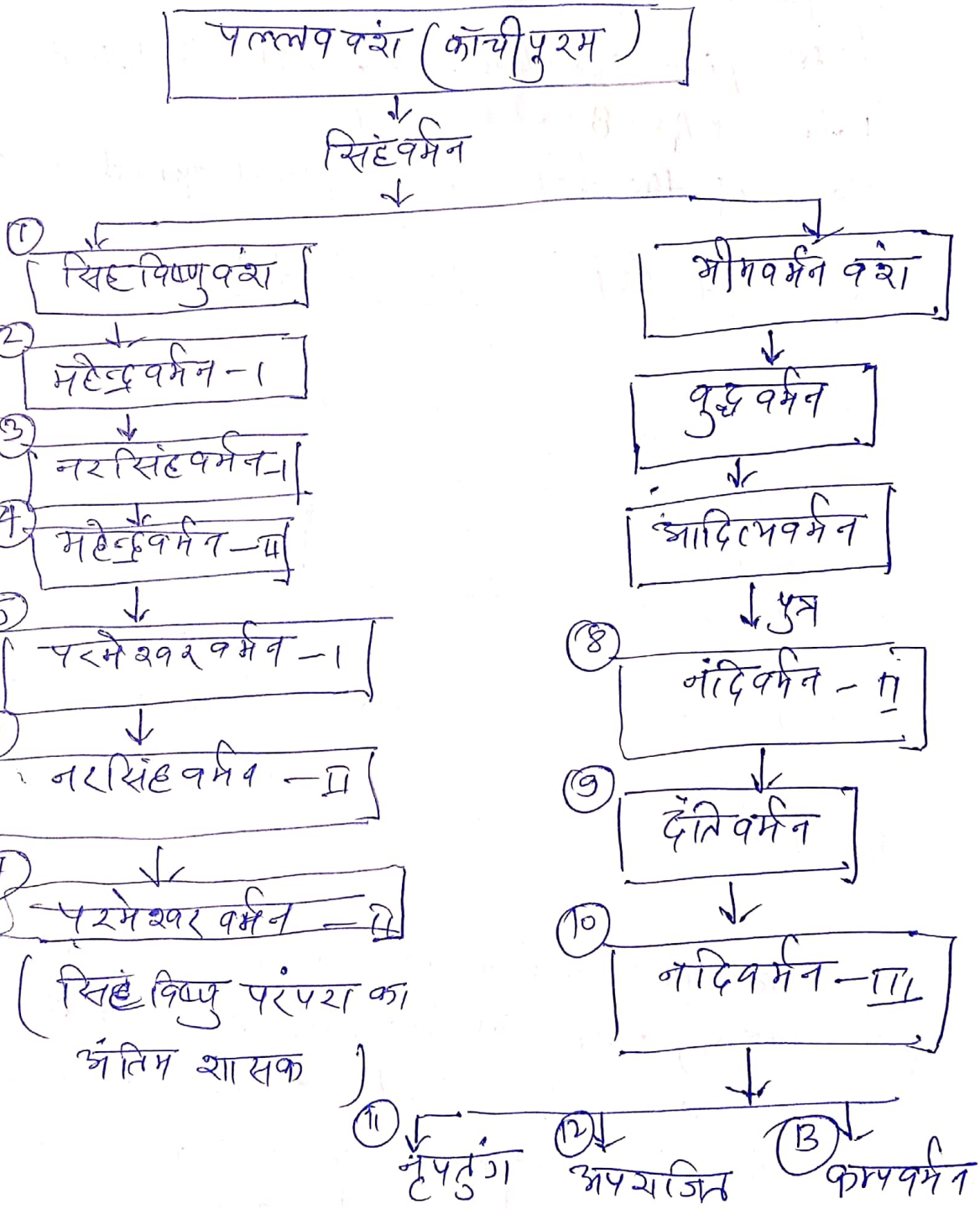

- (1) सिंहविष्णु वंश
  - ↓ (2) महेन्द्रवर्मन-I
  - ↓ (3) नरसिंहवर्मन-I
  - ↓ (4) महेन्द्रवर्मन-II
  - ↓ (5) परमेश्वरवर्मन-I
  - ↓ (6) नरसिंहवर्मन-II
  - ↓ (7) परमेश्वर वर्मन-II (सिंहविष्णु परंपरा का अंतिम शासक)
- भीमवर्मन वंश
  - ↓ बुद्धवर्मन
  - ↓ आदित्यवर्मन
  - ↓ पुत्र (8) नंदिवर्मन-II
  - ↓ (9) दंतिवर्मन
  - ↓ (10) नंदिवर्मन-III
  - ↓ (11) नृपतुंग, (12) अपराजित, (13) कम्पवर्मन

प्रमुख शासक

(1) **सिंहविष्णु** → (575 - 600 ई.)

- पल्लवों का प्रथम प्रमुख राजा सिंहविष्णु P.T.O.

था। उसने अवनि सिंह की उपाधि धारण की थी। यह सिंहवर्मन का पुत्र व उत्तराधिकारी था।

→ उसने अपने राज्य की सीमा कावेरी नदी तक विस्तृत कर ली।

→ वह एक वीर व पराक्रमी राजा था। उसने चेर, चोल, पांड्य, मलय, मालवा, कलभ्र व सिंहल के राजा के युद्ध में पराजित कर अपनी शक्ति का विस्तार किया।

→ उसकी सत्ता तमिल प्रदेश में पूरी तरह स्थापित हो गई।

→ उसने मामल्लपुरम का आदिवराह गुहा मंदिर का निर्माण कराया। इस मंदिर में सिंहविष्णु व उसकी 2 रानियों की प्रतिमा स्थापित की गई है।

(2) महेन्द्रवर्मन – I (600 - 630ई)

→ सिंहविष्णु का उत्तराधिकारी महेन्द्रवर्मन। बहुमुखी प्रतिभा का धनी था। उसने विचित्रचित्त, मत्तविलास, गुणभर, चेत्यकारी, शत्रुमल्ल, ललितांकुर, अवनिभाजन, संकीर्ण जाती आदि - उपाधि धारण की।

→ इसका समकालिन चालुक्य (बादामी) सम्राट पुलकेशिन II था। पुलकेशिन II ने महेन्द्रवर्मन I पर आक्रमण कर पल्लवों व चालुक्यों के बीच लंबे समय तक चलने वाले राजनीतिक संघर्ष को शुरू किया।

(3) नरसिंहवर्मन I – (630 – 668ई.)

→ उपाधि : महामल्ल / मामल

→ महेन्द्रवर्मन I के बाद उसका पुत्र नरसिंहवर्मन I कांची की गद्दी पर बैठा।

R+o.

Scanned with CamScanner

→ नरसिंह वर्मन I पल्लव वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था। उसने अपने पिता की पराजय के अपमान का बदला लिया। उसने पल्लवों की सैन्य-शक्ति को पुनः संगठित कर उत्तर दिशा में विजय करना आरम्भ की और चालुक्य सम्राट पुलकेशियन II को 3 युद्धों (1) परियाल (2) सूरमार (3) मणिमंगलम के युद्ध में पराजित किया।

→ वातापी जितने के उपलक्ष्य में वातापीकोण्ड (वातापी का विजेता) एवं महामल्ल / मामल्ल की उपाधि अपने नाम के साथ जोड़ ली।

→ नरसिंह वर्मन I के शासनकाल में 641 ई. में चीनी यात्री ह्वेनसांग कांची आया। उसने कांची के राजा और वहाँ के प्रजा की प्रशंसा की है। उसने पल्लव प्रदेश को रत्नों का आकार कहा है।

→ उसने महामल्लपुरम / मामल्लपुरम (महाबलिपुरम) नामक एक नये नगर की स्थापना की। इस नगर में उसने अनेक विशाल मंदिरों का निर्माण कराया, जिनमें से धर्मराज मंदिर अब तक विद्यमान है और उसके गौरव महत्ता का साक्षी है। उसने द्रविड़ शैली के जिस रूप का आरम्भ किया उसे उसके नाम पर मामल्ल शैली कहा जाता है।

(5) महेन्द्रवर्मन II (668 - 670 ई.)

→ नरसिंहवर्मन I के पश्चात, महेन्द्रवर्मन II शासक बना वह 2 वर्ष ही शासन कर सका, क्योंकि पल्लव - चालुक्य संघर्ष में उसे पुलकेशियन II के पुत्र विक्रमादित्य I के हाथों हत्या कर दी गई।

Scanned with CamScanner

गई।

(5) परमेश्वर I → (670 - 695 ई.)

→ महेन्द्र वर्मन II की हत्या के बाद परमेश्वरवर्मन I पल्लव राज्य का शासक बना।

→ परमेश्वरवर्मन I का समकालीन चालुक्य सम्राट विक्रमादित्य I था, जो पुलकेशिन II के समान ही वीर और विजेता था। विक्रमादित्य I ने न केवल वातापी को पल्लवों की अधीनता से मुक्त किया।

→ परमेश्वरवर्मन I ने विद्याविनीत व पल्लव महेश्वर की उपाधि धारण की। उसके समय में मामल्लपुरम का प्रसिद्ध गणेश मंदिर का निर्माण हुआ।

(6) नरसिंहवर्मन II - (695 - 720 ई.)

→ परमेश्वरवर्मन I के प्रताप और पराक्रम से पल्लवों की शक्ति इतनी बढ़ गई थी कि जब 7वीं सदी ई. के अंत में उसके परवर्ती नरसिंहवर्मन II कांची की राजगद्दी पर बैठा।

→ नरसिंहवर्मन II का शासनकाल शांति व व्यवस्था का काल था और इसीलिए वह अपनी शक्ति को निश्चिततापूर्वक मंदिरों के निर्माण में लगा सका। कांची का कैलाशनाथ मंदिर (राजसिंहेश्वर मंदिर / राजसिंहेश्वर मंदिर), ऐरावतेश्वर के विशाल मंदिर और मामल्लपुरम के अनेक प्रसिद्ध मंदिर उसी के द्वारा बनवाए हुए हैं।

→ उसने राजसिंह, आगमप्रिय, व शंकरभक्त

Scanned with CamScanner

उसकी सर्वप्रिय की उपाधियाँ थी।

→ नरसिंहवर्मन II ने काँची में घटिका (संस्कृत महाविद्यालय) की स्थापना की थी।

→ नरसिंहवर्मन II ने एक दूत मंडल चीन भेजा (720ई.)

(7) परमेश्वरवर्मन II - (720-730ई.)

→ परमेश्वरवर्मन II को चालुक्य नरेश विक्रमादित्य II से अपमानजनक संधि करनी पड़ी। और जब उसने इसका प्रतिकार करने का प्रयास किया तो चालुक्यों के सहयोगी गंग शासक ने उसे युद्ध में उसे पराजित कर डाला।

(8) नंदिवर्मन II -(730-795ई.)

→ परमेश्वरवर्मन II की हत्या के बाद राजसत्ता के लिए गृहकलह छिड़ गया। गृहकलह का अंत करने के लिए प्रजा के प्रतिनिधियों ने नंदिवर्धन पल्लवमल्ल को 12 वर्ष की अल्पायु में शासक बनाया। वह पल्लवों की दूसरी शाखा (सिंहविष्णु के भाई भीमवर्मन का वंशज) से संबद्ध था। वह हिरण्यवर्मन का पुत्र था।

→ नंदिवर्मन II ने पल्लवों की सैन्य शक्ति को पुनः संगठित किया और काँची को चालुक्यों की अधीनता से मुक्त कराया।

→ राष्ट्रकूट सत्ता का संस्थापक दंतिदुर्ग ने 750ई. में आक्रमण कर काँची पर अपना कब्जा जमा लिया किन्तु शांति - समझौते के फलस्वरूप अपनी पुत्री रेवा का विवाह नंदिवर्मन II के साथ करने के बाद वापस चला गया। नंदिवर्मन II का उत्तराधिकारी पुत्र दंतिवर्मन का जन्म इसी राष्ट्रकूट राजकुमारी रेवा से हुआ। किन्तु वैवाहिक सम्बंध के बावजूद आगे पल्लव - राष्ट्रकूट संघर्ष जारी रहा।

भारती कुमारी